6

विजय का काल

यरदन पार करने से लेकर यहोशू की मृत्यु तक, 1451-1400 ई.पू. (यहोशू 1-24)

I. यरदन का मार्ग

1. नया अगुआ। –मूसा इस्राएल को यरदन के पूर्व में डेरा लगाए छोड़ गया। सीहोन और ओग पर विजयों से यरदन के पूर्वी पठार पर नियन्त्रण हो गया था। कनान यरदन के पश्चिम में दीवारों वाले शहर में योद्धाओं से भरा एक पहाड़ी देश था। उनके सामने कोई काम छोटा नहीं था। महान लोगों के लिए महान घटनाएं होना आवश्यक है। इस्राएल को फिर कोई दूसरा मूसा नहीं मिला। परन्तु नये लोगों के लिए नये अवसरों की मांग अवश्य रहती है। परमेश्वर जिसने छुटकारे और संगठन के काम के लिए मूसा दिया था, अब उन्हें विजय तथा बसने के काम के लिए उन्हें यहोशू देता है।

2. यरदन दो भागों में बंट जाती है। –इस्राएली शक्तिशाली शत्रुओं का सामना करते हुए जो उन्हें वापस जाने का दबाव डाल रहे थे, लाल सागर तक आए। वे सामर्थी शत्रुओं का सामना करते हुए यरदन तक आए थे। लाल सागर की तरह ही यहां भी, परमेश्वर और उनके अगुवे में विश्वास के साथ प्रेरणा देने के लिए एक सांकेतिक आश्चर्यकर्म हुआ। कटनी का समय था। लेबानोन पर्वत की बर्फ पिघलकर यरदन के मैदानी इलाकों में आ गई थी। न कोई किश्ती थी न पुल। परन्तु पवित्र संदूक को लिए हुए जैसे ही याजकों ने नदी के किनारे कदम रखा, उसका पानी दो भागों में बंट गया और इस्राएली उस सूखे भाग में से नदी पार कर गए। दो यादगारें बनाई गईं, एक नदी में और दूसरी गिल्गाल में, जहां उन्होंने रात को डेरा डाला था।

3. गिल्गाल में डेरा। –यहां पर जंगल में भ्रमण के दौरान छोड़ दी गई खतना की रीति को फिर से दोहराया गया, और उनके अविश्वास का दोष और उसका दण्ड हटा दिया गया; इसलिए उसका नाम गिल्गाल पड़ा। जिस प्रकार मिसर से निकलने की रात फसह मनाया गया था वैसे ही यहां भी मनाया गया। उस समय देश में से मौत के फ़रिश्ते के गुजरने के समय उसकी उपस्थिति से मिसरी भयभीत हो गए थे; अब यरीहो की दीवारों के पीछे कनानी लोग भय से कांप रहे थे। मन्ना मिलना यहीं बंद हुआ था और यहां या बेतेल के निकट वाले गिल्गाल में, इस्राएल के गोत्रों में बंटने से पहले कनान पर विजय पाने तक यहीं पर डेरा डाला था।

II. यरीहो पर कब्ज़ा

यरदन पार करने से पहले शत्रु के गढ़ों की टोह लेने के लिए यहोशू ने जासूसों को भेजा। यरीहो की रहने वाली राहाब नामक एक स्त्री ने परमेश्वर के लोगों के भविष्य में दृढ़ विश्वास से उन जासूसों को छुपा कर उनके द्वारा नगर पर कब्ज़ा करने के समय उसके घर की सुरक्षा का आश्वासन लिया था। गिल्गाल में डेरा लगाने के समय यहोशू को मूसा की तरह ही अधिकार मिला था। परन्तु, परमेश्वर ने उसे जलती हुई झाड़ी में से नहीं, बल्कि एक खींची हुई तलवार के साथ दर्शन दिया जिसका विजय के काम के लिए विशेष महत्व था। परन्तु यरीहो पर कब्ज़ा करने का ढंग यह सिद्ध करने के लिए था कि यह काम मनुष्य का नहीं, बल्कि परमेश्वर का था। यरीहो नदी के पार उस जगह के निकट ही था जहां वे थे। उनके लिए यह कनान में प्रवेश करने का द्वार था। इसे छोड़ा नहीं जाना चाहिए। इस्राएल के पास कोई ऐसी मशीन नहीं थी जिससे वे इसकी दीवारों को गिरा सकते। परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार उन्होंने पवित्र संदूक लेकर, जुलूस के रूप में छह दिन तक उसके इर्द-गिर्द एक-एक बार घूमे, और सातवें दिन, सातवीं बार उनके नरसिंगा फूंकने और बड़े ज़ोर से जयघोष करते ही यरीहो की दीवारें गिर गईं और उन्होंने नगर को अपने कब्ज़े में ले लिया। मिसर का जुआ तोड़ने वाला **यहोवा** ही था, जिसने समुद्र में से मार्ग निकाला, जो जंगल में उन्हें खाना खिलाता रहा और उनकी अगुआई की, उन्हें व्यवस्था दी और उनके लिए यरदन नदी में मार्ग दिया। **यहोवा** ही था जिसने भ्रष्ट कनानियों को निकालकर वाचा के अपने लोगों को प्रतिज्ञा किया हुआ देश देकर अपनी वाचा को पूरा किया।

III. केन्द्रीय कनान पर विजय

1. ऐ पर कब्ज़ा। -केन्द्रीय कनान के लिए ऐ प्रमुख क्षेत्र था। इस्राएल को पहले आक्रमण में ही पराजय मिली थी। कारण, अकान के पाप में मिला था, जिसमें यरीहो के लूट के माल में से सोने की एक ईंट, कुछ चांदी और शिनार देश का एक सुन्दर ओड़ना लोभ से अपने पास रख लिया था। यह समय स्वार्थी होने का नहीं था और अकान को अपने पाप का हर्जाना अपना जीवन देकर चुकाना पड़ा। दूसरे आक्रमण से ऐ और पूरा केन्द्रीय कनान इस्राएल के वश में हो गया।

2. शकेम की सभा। -इस्राएली अब उस देश के मध्य भाग में हैं। पुरखाओं के कदमों के चिह्न उनके आस पास हैं। शकेम में इब्राहीम ने अपना तज़्बू गाड़कर वेदी बनाई थी। बेतेल में, भगौड़े याकूब ने अपना दर्शन देखकर वहां एक यादगार बनाई थी। निर्वासन से लौटने के बाद वह शकेम में बस गया था और वहां उसने मैसोपोटामिया से अपनी पत्नी द्वारा लाई गई मूर्तिपूजा की निशानी गाड़ दी थी। पर अब जबकि परमेश्वर की सामर्थ से वाचा पूरी हो गई थी, यह उपयुज़्त है कि यहां पर वाचा को फिर से दोहराया जाए और उसकी यादगार रखी जाए। इसलिए मूसा की पहली आज्ञाओं के अनुसार (व्यवस्था 27), शकेम में एक सभा होती है। शकेम उज़र में एबाल पर्वत और दक्षिण में गिराजीम पर्वत के बीच एक तंग घाटी के बीच में है। घाटी के बीच लेवी खड़े थे। उनके द्वारा आज्ञा मानने के

लिए आशिषें दिए जाने की बात सुनकर गिराजीम पर छह गोत्रों ने उज़र दिया था, ''आमीन;'' जब उन्होंने आज्ञा न मानने के श्रापों का वर्णन किया तो दूसरे छह गोत्रों ने एबाल से पुकारकर कहा था ''आमीन।'' फिर व्यवस्था लिखकर वहां स्मृति चिह्न के लिए एक पत्थर लगा दिया गया और बलिदान का पर्व मनाया गया।

IV. दक्षिण के राजाओं का संघ और विजय

1. गिबोनियों के साथ उनका समझौता। –विजय के वर्षों के दौरान लगता है कि इस्राएल का प्रमुख डेरा केन्द्रीय कनान में गिल्गाल नामक स्थान में था। ऐ के गिरने के शीघ्र बाद, ऐ के दक्षिण में गिबोन नगर से कुछ संदेशवाहक दूर देश से आने का बहाना करके और अपने बचाव के लिए समझौते की पेशकश करने यहोशू के पास आए। यहोशू ने तरस खाकर उनकी बात मान ली। उनके छल के विषय में जानकर उसने पवित्रता से उनके साथ की गई वाचा पर खरा उतरते हुए उनका नाश तो नहीं किया, परन्तु उन्हें इस्राएलियों के ''लकड़हारे और पानी भरने वाले'' बना दिया।

2. बेथोरोन का युद्ध। –गिदोन के साथ समझौते से दक्षिण में यरूशलेम, हेब्रोन, यरमूत, लाकीश, और एग्लोन के राजाओं ने रक्षात्मक और आक्रामक सज़्बन्ध बनाने के लिए एक संघ बना लिया। उन्होंने गिबोन पर आक्रमण कर दिया जो यहोशू को अच्छा लगा। उसने रात को ही कूच करके उन पांचों राजाओं के संघ पर आक्रमण कर दिया और उन्हें बेथोरोन के बड़े युद्ध में पराजित कर दिया। यह वह प्रसिद्ध ''लज़्बा दिन'' था, जिसमें एक पुरानी कविता के अनुसार (यहोशू 10:12, 13), सूर्य और चांद यहोशू की आज्ञा से ठहर गए थे।

V. उज़र का राज्यों का संघ और विजय

कनानियों द्वारा एक और संयुज़्त प्रयास किया गया था। उज़र में हासोर के एक शज़्तिशाली राजा याबीन ने उस संघ की अगुआई की जिसे यहोशू ने मेरोम नामक ताल के निकट हराया था। इससे मिलाजुला विरोध खत्म हो गया। यह लड़ाई कई कबीलों द्वारा अलग-अलग जीतने के कारण छोटे-छोटे झगड़ों में तबदील हो गई। यह काम उस दक्षता से नहीं हुआ जो परमेश्वर ने बताई थी और जो उनके राष्ट्रीय जीवन के लिए बहुत आवश्यक थी। उनका जोखिम मैत्री के समझौतों तथा अन्तर्विवाहों में था। उनकी और उनके धर्म की सुरक्षा पूरी तरह से उनके अलग रहने में थी। कनानियों को बाहर निकालने की असफलता ही अगले काल की स्थिति की मुज़्य बात है।

VI. देश का विभाजन व यहोशू की मृत्यु

1. देश का विभाजन। –राजाओं के संघ के विरोध का सामना करने के बाद, यहोशू ने देश को बारह गोत्रों में चिट्ठी डालकर बांट दिया। देश का एक भाग देने के लिए लेवियों को गोत्र नहीं माना गया था, परन्तु उन्हें पूरे कनान में फैले अड़तालीस नगर दिए गए। इनमें छह शरण नगर थे, जिनके नाम हैं: गिलाद का रमोत, बेसेर, फूर, और केदेश, शकेम और

यरदन के पश्चिम में हेब्रोन। याकूब ने यूसुफ के दो पुत्रों, एप्रैम और मनश्शै को अपने पुत्र बनाकर गोद ले लिया था, जिससे लेवियों को निकालकर बारह गोत्र हो गए। उनके नाम हैं: रूबेन, शिमोन, यहूदा, इस्साकार, ज़बूलून, दान, नप्ताली, गाद, आशेर, एप्रैम, मनश्शै और बिन्यामीन।

2. यहोशू की विदाई और मृत्यु। –यहोशू उस पीढ़ी में जिसने मिसर में और लाल सागर में अद्‌भुत काम देखे थे, सबसे अधिक उम्र का था। कालेब और यहोशू को छोड़ *वे* जंगल में ही मर गए, जबकि वह एक सौ दस वर्ष तक जीवित रहा। अंत तक यहोवा और उसकी वाचा के प्रति वफादार रहते हुए, उसने एक बार फिर ऐतिहासिक शकेम में सब गोत्रों को इकट्ठा किया। वहां उसने उन्हें उनका इतिहास याद दिलाया और विश्वास से फिर जाने के खतरे की चेतावनी दी। ''आज चुन लो कि तुम किसकी सेवा करोगे, ... परन्तु मैं तो अपने घराने समेत यहोवा ही की नित सेवा करूंगा''[1] ऐसे अच्छे शब्दों से वह परमेश्वर की सेवा में उन्हें और अपने घराने को भी समर्पित होते देखना चाहता है। फिर राष्ट्रीय वाचा को नये सिरे से बनाने के लिए वह पत्थर का एक स्मृति चिह्न खड़ा कर देता है और सभा भंग करके उसके शीघ्र बाद अपने बाप दादाओं के पास चला जाता है।

पाद टिप्पणी

[1]यहोशू 24:15.